

## सम्पादकीय

संरक्षक  
डॉ. बिजेन्द्र सिंह  
अध्यक्ष,  
एन.एच.आर.डी.एफ.  
दिल्ली

निदेशक (प्रभारी)  
डॉ. पी. के. गुप्ता

मुख्य सम्पादक  
डॉ. पी. के. गुप्ता  
कार्यक्रम समन्वयक

मार्गदर्शक  
निदेशक  
आई.सी.ए.आर.-अटारी  
जोन-II  
जोधपुर (राज.)

सम्पादक मण्डल  
श्री राकेश कुमार  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (बागवानी)  
श्रीमती रितू सिंह  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृहविज्ञान)  
डा० देवेन्द्र कुमार राणा  
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पादक सुरक्षा)  
श्री बृजेश यादव  
कार्यक्रम सहायक (मृदा)

### सूचना प्रौद्योगिकी की कृषि में बढ़ती उपयोगिता

कृषि में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग पिछले कुछ वर्षों में विश्व में तेजी से बढ़ा है। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कई प्रकार की पहल देश में भी की गई है। इनमें राष्ट्रीय कृषि मंडी (e-NAM), पूसा कृषि ऐप, किसान सुविधा ऐप, के. वी. के. मोबाईल ऐप, एमकृषि मत्स्य ऐप, भीम ऐप आदि। इनमें से ई-नाम का महत्व पूरे देश में 585 थोक ए पी एम सी (मंडियों) को आपस में जोड़ने के रूप में है। इसी प्रकार किसान ऐप के माध्यम से मौसम, नजदीकी बाजार के भाव, फसल सुरक्षा आदि की सूचना एवं जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इसी क्रम में के. वी. के. मोबाईल ऐप, को भी जोड़ा गया है। इस ऐप से बीज उत्पादन व यंत्रों से जुड़ी सूचनाएं हासिल कर सकते हैं। इसमें फसल और पशुपालन पर अलग से जानकारी दी गई है।

इसके अतिरिक्त सूचना प्रौद्योगिकी के जरिये फसल एवं पशुपालन के लिए उपयोगी जानकारियों एवं सूचनाओं को भी किसानों तक पहुँचाने के प्रयास विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा देशव्यापी स्तर पर किया जा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित सूचना अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी एवं अन्य प्रादेशिक भाषाओं में पोर्टल उपलब्ध है। कई सूचना प्रणालियां बिना इंटरनेट के भी कृषकों के लिए सुलभ हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के वर्तमान दौर में देश के किसान भाइयों को भी अधतन सूचना एवं जानकारियां हासिल करने के आधुनिक तौर तरीकों को अपना रहे हैं।

### संकल्प से सिद्धि-न्यू इण्डिया मंथन कार्यक्रम का आयोजन

#### संकल्प से सिद्धि



भारत के प्रधानमंत्री जी का 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने के लक्ष्य की प्राप्ति से जुड़े अथक प्रयासों के क्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा नई दिल्ली में संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम का आयोजन 30 अगस्त 2017 को किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथि, विशेषज्ञ, किसान एवं महिला किसानों ने संकल्प से सिद्धि से जुड़े आठ बिन्दुओं पर आधारित शपथ ली। इस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि श्री जलज श्रीवास्तव, आई. ए. एस. अतिरिक्त सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने किसानों को बहुफसली पद्धति अपनाने की सलाह देते हुए कहा कि इस तकनीकी को अपनाने से जोखिम में कमी आने के साथ-साथ आमदनी भी बढ़ेगी। उन्होंने किसानों को उन योजनाओं कि जानकारी दी जो केन्द्र सरकार की और से किसान कल्याण के लिए शुरू किए हैं दिल्ली सरकार के विकास आयुक्त श्रीमती मनीषा सक्सेना आई. ए. एस. ने कहा कि राज्य सरकार आने वाले समय में किसानों के हित में अनेक योजनाओं की शुरुआत करने जा रही है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक (प्रसार) डा. रणधीर सिंह ने किसानों को बताया कि आमदनी बढ़ाने हेतु अलग परम्परागत खेती के बजाए एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाया जाए तो किसानों के लिए लाभप्रद होगा। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा के संयुक्त निदेशक (प्रसार) डा. जे. पी. शर्मा ने कहा कि जमाना उत्पाद में मुल्य संवर्धन कर किसान अच्छा खासा मुनाफा अर्जित कर सकते है इस कार्यक्रम मे कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के कार्यक्रम समन्वयक डा. पी. के. गुप्ता ने सभी आमंत्रित अतिथियो एवं किसानों का स्वागत किया। इस अवसर पर उपायुक्त द. प. दिल्ली श्री अभिषेक देव, आई. ए. एस., एस. डी. एम. नजफगढ़ श्रीमती डा. किन्नी सिंह, आई. ए. एस. ने कृषि में आय कैसे बढ़े तथा सरकारी योजनाओ का लाभ कैसे ले इस पर अपने अपने विचार व्यक्त किये। यह कार्यक्रम डी डी किसान, डी डी नेशनल तथा विभिन्न समाचार पत्रों के द्वारा प्रसारण किया।

## माली एवं मशरूम उत्पादन विषय पर कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन



माली कौशल विकास

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, नई दिल्ली द्वारा प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत 200 घण्टे अवधी के एक मशरूम उत्पादन विषय पर कौशल विकास प्रशिक्षण क्रमशः (25 अगस्त - 21 सितम्बर, 2017) एवं माली कौशल विकास प्रशिक्षण (25 सितम्बर - 31 अक्टूबर, 2017) तक आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान द्वारा प्रायोजित एवं एकीकृत बागवानी विकास अभियान, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किये गये। इस प्रशिक्षण मे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली एवं आस-पास राज्यों के नवयुवक एवं नवयुवतियों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण भारत के कृषि कौशल परिषद के पाठ्यक्रम के अनुसार किया गया एवं मूल्यांकन के पश्चात सफल अभ्यर्थी को परिषद द्वारा प्रमाण पत्र दिया गया।

## बागवानी फसलो का नर्सरी उत्पादन विषय पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, नई दिल्ली द्वारा दिल्ली के आस पास क्षेत्रों के ग्रामीण नवयुवक एवं नवयुवतियों हेतु बागवानी फसलो को नर्सरी उत्पादन विषय पर एक सप्ताह का व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 20-26 जुलाई, 2017 तक किया गया। इस प्रशिक्षण के अंतर्गत नर्सरी से सम्बन्धित तकनीकीयां (खुले खेत व संरक्षित संरचना मे ऊंची उठी क्यारी में, प्रो ट्रे के अन्दर मृदा रहित माध्यम से पौध तैयार करने के तरीके) पौधों के वानस्पतिक भाग से नये पौधे बनाने की प्रवर्धन तकनीकी का विस्तार पूर्वक सैद्धान्तिक व प्रायोगिक रूप से प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन करने के पश्चात सफल अभ्यर्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।



बागवानी फसलों की नर्सरी

## मशरूम उत्पादन विषय पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, के तत्वाधान में ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 07/11/2017 से 13/11/2017 को किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण किसानों व नवयुवको को प्रशिक्षण के बाद स्वरोजगार के प्रति प्रोत्साहित करना था। इस व्यावसायिक प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को बटन मशरूम जिसकी सालभर मांग रहती है दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों मे 15-22 °C तापमान में



मशरूम उत्पादन

प्राकृतिक अवस्था में अक्टूबर-मार्च के दौरान इसका उत्पादन किया जा सकता है। इसके अलावा मशरूम की अन्य प्रजातियों को भी उगाकर किसान परंपरागत खेती के अपेक्षा अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। इस कार्यक्रम के दौरान मशरूम फार्म का भ्रमण कराया गया एवं मूल्यांकन के पश्चात् प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

## फल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 10-20 नवम्बर 2017 तक फल एवं सब्जियों का मूल्यसंवर्धन विषय पर दस दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली नगरीय व परि क्षेत्र के किसानों, नवयुवकों व नवयुवतियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मूल्यसंवर्धन हेतु अच्छी गुणवत्ता वाली एवं उपयोगी सामग्री का प्रयोग करते हुए बाजार में फल व सब्जियों सस्ते होने पर न बेचकर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। एवं प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य संवर्धन व पैकिंग की विस्तृत जानकारी प्रायोगिक रूप से दी गई। तथा प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।



फल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन

## प्याज, लहसुन और आलू में अभिनव प्रौद्योगिकी और मूल्य श्रृंखला प्रबंधन के द्वारा किसानों की आय में वृद्धि विषय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन :-

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, एवं राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान द्वारा राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान नई दिल्ली के चालीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर अभिनव प्रौद्योगिकी एवं मूल्य, श्रृंखला प्रावधान के द्वारा किसानों के आय में वृद्धि पर राष्ट्रीय किसान संगोष्ठी का आयोजन 02-03 नवम्बर, 2017 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा में एकीकृत बागवानी विकास अभियान एवं कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से आयोजित किया



गया। इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डा. जलज श्रीवास्तव, आई. ए. एस., अतिरिक्त सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समारोह का उद्घाटन किया गया। स्वागत संबोधन में डॉ. पी. के. गुप्ता कार्यक्रम समन्वयक कृषि विज्ञान केन्द्र एवं (कार्यवाही) निदेशक, एन. एच. आर. डी. एफ. द्वारा किया गया इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में देश के जाने माने कृषि वैज्ञानिक डॉ. कीर्ति सिंह, पूर्व कुलपति, डॉ. एच. पी. सिंह, पूर्व उपमहानिदेशक (बागवानी) डॉ. ए. के. लबाडे, पूर्व कुलपति, डा. बिजेन्द्र सिंह, अध्यक्ष एन. एच. आर. डी. एफ., डॉ. आर. पी. गुप्ता, मुख्य सलाहकार, एकीकृत बागवानी विकास अभियान, भारत सरकार, डॉ. सुरेश अग्रवाल, अध्यक्ष बीजोशीतल आदि लोग उपस्थित थे। संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रांतों जैसे उ. प्र., मध्य प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, बिहार तथा दिल्ली से लगभग 550 किसानों ने भाग लिया।

डॉ. कीर्ति सिंह ने प्रतिष्ठान के विगत चालीस वर्षों के इतिहास और उपलब्धियों की चर्चा की एवं डॉ. के. एल. चडड़ा पूर्व उप महानिदेशक बागवानी ने संस्थान को आत्मनिर्भरता पर प्याज, आलू, लहसून के खेती में उपकरण से खेती के लागत में कमी और संकर प्याज के उत्पादन के बारे में विचार व्यक्त किये।

उद्घाटन समारोह में डॉ. एस. के. सिंह, उपनिदेशक, एन. एच. आर. डी. एफ., ने संस्थान के चालीस वर्ष की सफल यात्रा की प्रस्तुती दी एवं तकनीकी सत्र के दौरान देश के विभिन्न संस्थान IARI, प्याज व लहसुन, ICRI, CPRI, नाफेड, एफीडा विभिन्न प्रसंस्करण एवं विपणन इकाई व कृषि मण्डी व किसान प्रतिनिधियों ने अपने अपने अनुभव एवं विचार प्रस्तुत किये जो इस संगोष्ठी के विषय को सफल बनाने में सहायक हुआ होगा।



## विश्व मृदा दिवस का आयोजन

भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 05 दिसम्बर को विश्व मृदा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई इसी कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा में विश्व मृदा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. चन्द्रपाल सिंह यादव, सदस्य राज्यसभा एवं अध्यक्ष, (कृभको) ने सम्बोधित करते हुए किसानों को यह बताया कि मृदा की जांच के आधार पर फसलो का चयन एवं खाद की मात्रा निर्धारित कर अपने खेती की लागत को कम कर सकते है साथ ही उचित फसल लेकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते है। इस कार्यक्रम मे डा. विजेन्द्र सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान ने सभी को अभिवादन करते हुए बताया कि कृषि की छोटे जोत होने के कारण इसका इस्तेमाल व्यावसायिक रूप से कर सकते है एवं उन्होने कृषि आधारित व्यवसाय अपनाने पर जोर दिया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के मृदा व जल संरक्षण विभाग के प्रधान वैज्ञानिक डा. ध्यान सिंह (सेवानिवृत्त) ने मृदा एवं जल के जांच के तरीके की बारिकियों को विस्तृत पूर्वक जानकारी दी एवं साथ ही मृदा स्वास्थ्य कार्ड के महत्व को समझाया। केंद्र के कार्यक्रम समन्वयक डा. पी. के. गुप्ता ने उपस्थित सभी अतिथियों, किसानों तथा मीडिया मित्रों का स्वागत करते हुए विश्व मृदा दिवस के बारे मे लोगो को अवगत कराया साथ ही उन्होने बताया कि कृषि विज्ञान केन्द्र में यह सुविधा बिना किसी शुल्क के उपलब्ध है। इस अवसर पर 80 किसानों की मुख्य अतिथि एवं उपस्थित अतिथियों के द्वारा मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गये।



विश्व मृदा दिवस

## विश्व मधुमक्खी दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा में दिनांक 19 अगस्त 2017 की विश्व मधुमक्खी दिवस का आयोजन किया गया जिसमे विशेषज्ञों के साथ दिल्ली व आस पास के विभिन्न गांवों के किसानों, दिल्ली सरकार के कृषि प्रसार अधिकारी, प्रगतिशील मधुमक्खी पालन किसान तथा मीडियाकर्मी आदि लोगो ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र मे कार्यक्रम समन्वयक डा. पी. के. गुप्ता ने बताया कि मधुमक्खी पालन से प्राप्त शहद प्राकृतिक उपहार के साथ आय दुगुनी का मुख्य स्रोत है एवं फसलों मे परागण की प्रक्रिया से उत्पादन बढ़ाने में बहुत सहायक है। इस संस्थान के पादप रोग वैज्ञानिक डा. डी. के. राणा ने बताया कि बाजार में शहद की मांग प्रतिदिन बढ़ रही है ऐसे में मधुमक्खी पालन का व्यवसाय किसानों के लिए लाभदायक है कम मेहनत, कम पूँजी के साथ भी इस व्यवसाय को शुरू कर सकते है इस सत्र के दौरान बागवानी विशेषज्ञ ने बताया कि मधुमक्खी पालन हेतु वर्ष भर फूल की उपलब्धता एवं परागण हेतु उपयुक्त फसल चक्र के बारे में जानकारी दी। केंद्र के गृह विज्ञान विशेषज्ञ ने बताया कि शहर का फल एवं सब्जियों में मूल्य संवर्धन कर: अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। इस कार्यशाला प्रक्रिया मे लगभग 50 किसानों ने भाग लिया।



विश्व मधुमक्खी दिवस

## दिल्ली सरकार के प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, द्वारा वार्षिक कार्य योजना के अनुसार नवीनतम तकनीकी विषय पर स्वास्थ्य एवं पौष्टिक व्यंजन पर बाल कल्याण मंत्रालय, दिल्ली सरकार के आंगनबाडी कार्यकर्ताओं एवं प्रसार अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किशोर - किशोरीयों/नवयुवको में बढ़ती कुपोषण के कारण तथा इसका संतुलित पौष्टिक तत्वों द्वारा कैसे प्रबंधन करे इसकी जानकारी दी गई ताकि इन प्रसार कार्यकर्ता के माध्यम से यह जानकारी अधिक से अधिक लोगो तक जल्दी व सुगम तरीके तक सुगमता से पहुँच सके।



दिल्ली सरकार के प्रसार कार्यकर्ता



## स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, नई दिल्ली द्वारा भारत सरकार द्वारा किये गये संकल्प स्वच्छ भारत अभियान के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजित किया गया। इस स्वच्छता अभियान कार्यक्रम के दौरान के. वी. के. के अधीकृत गांवों में सामूहिक स्वच्छता, कचरा प्रबंधन, प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग, मुख्य सड़कों, सार्वजनिक स्थलों की सफाई, स्कूलों में स्वच्छता हेतु जागरूक करना आदि कार्यक्रम प्रशिक्षण व सफाई प्रदर्शन के माध्यम से लोगों को जागरूक किया गया इस कार्यक्रम में केन्द्र के विशेषज्ञों के सहयोगियों से स्थानीय ग्रामीणों/किसानों/नवयुवकों/नवयुवतियों आदि के साथ सफाई कार्य में श्रमदान किया।



## मृदा जाँच अभियान कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा, द्वारा दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों में खरीफ व रबी मौसम की फसल लेने से पूर्व मृदा की जाँच एवं जाँच के आधार पर मौसम आधारित फसलों का चयन करे जो कि किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो इसके लिए के. वी. के. द्वारा समय-समय पर मृदा जाँच अभियान कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इस अभियान में मृदा जाँच हेतु नमूने लेने के तरीके जाँच के आधार पर फसलों का चुनाव, खाद-उर्वरक प्रबंधन तथा किसानों को स्वास्थ्य कार्ड वितरण आयोजित किया गया। जिसमें किसानों को उचित सलाह एवं फसल प्रबंधन की जानकारी प्राप्त हो सके।



## बीज उपचार अभियान

खरीफ मौसम व रबी मौसम की फसल बुआई व पौध की रोपण से पूर्व बीज व पौध का उपचार फफूँदनाशी, कीटनाशी एवं जैव कल्चर के द्वारा करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली के विभिन्न गांवों में बीज उपचार अभियान को कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा द्वारा चलाया गया जिसमें किसानों को बीज उपचार के लाभ तथा बीज उपचार करने के तरीके बताये गये। जिससे फसलों में लगने वाले भूमि जनित व बीज जनित बीमारियों से बचाव किया जा सके। इस अभियान में अनाजवाली फसलों, सब्जियों तथा दलहनी फसलों के बीज उपचार प्रदर्शन के माध्यम से किसानों को बताया गया।



## फसल अवशेष को जलाने से बचाव हेतु अभियान

धान की कटाई के बाद कई किसान खेत में बचे फसल अवशेषों को जला देते हैं। ऐसा करने से वातावरण पर तो दुष्प्रभाव पड़ता ही है साथ ही खेत में मिट्टी की उपरी-सतह पर पाई जाने वाली लाभदायक जीवाणु भी इस दौरान नष्ट हो जाते हैं जिसमें मिट्टी की उर्वरता शक्ति को हानि होती है।

फसल अवशेष को जलाने से बचाव हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र उजवा द्वारा खरीफ मौसम में धान की फसल की कटाई के उपरान्त और फसल अवशेषों के निष्पादन की दिशा में किसानों के लिए जागरूकता अभियान शुरू किया गया है इस अभियान के वक्त किसानों को खेत की जुताई के लिए कल्टीवेटर या रोटीवेटर का प्रयोग करके प्रदर्शनी का आयोजन कर उनको जानकारी दी गई कि फसल अवशेषों को 25 किलोग्राम यूरिया खाद प्रति हैक्टेयर के साथ डालकर खेत में मिलाने से लगभग 20-25 दिन के भीतर फसल के बचे अवशेष सड़-गल कर खाद बन जाती है व फसल के बचे



अवशेष से किसान कम्पोस्ट खाद भी तैयार कर सकते हैं। जो खेत में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा को बढ़ाता है इसके अलावा स्ट्रार रीपर की मदद से इन अवशेषों को भूसा बना पशुओं का चारा बना सकते हैं इन सब उपायों में वातावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है।

## गृहवाटिका-खाद्य सुरक्षा का विकल्प

हमारे देश में सब्जियों का उपयोग, सिफारिश कि गई मात्रा के अनुसार काफी कम (200 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन) है। आई सी. एम. आर. के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने भोजन में लगभग 100 ग्राम पत्तेदार, 100 ग्राम जड़वाली तथा 100 ग्राम अन्य प्रकार की सब्जियों की जरूरत है। वर्तमान में बाजार में उपलब्ध सब्जियाँ व फल आमतौर पर ताजे नहीं होते तथा महंगे भी होते हैं। साथ ही इनमें मौजूदा रोगाणुओं व हानिकारक रसायनों की मात्रा के कारण ये स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाते हैं। अगर हम सब्जियाँ में ताजी व स्वस्थ सब्जियों की उपलब्धता के कारण से बचने के लिए घर के आस-पास गृहवाटिका में कुछ सब्जियों को उगाकर स्वस्थ व ताजी सब्जियों प्राप्त कर सकते हैं एवं साथ में पैसे की बचत करके, घर के आस-पास अनुकूल-वातावरण बनाकर घर के सदस्यों के कार्य करने के लिए व्यायाम का साधन बना सकते हैं। गृहवाटिका के कार्य से सभी लोग जुड़ सकते हैं, चाहे वे गाँव में रहते हों या शहर में जहाँ पौधे उगाने के लिए जमीन की उपलब्धता हो या फिर कुछ जगहों पर जमीन की उपलब्धता न हो वहाँ पर कुछ चुनिंदा सब्जियों को विभिन्न आकार के गमलो व डिब्बों में छत पर बागवानी के रूप में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। गाँव में जहाँ जगह की कमी नहीं है, वहाँ सब्जियों के अलावा फल वाले पौधे जैसे पपीता, केला, नींबू, कढ़ीपत्ता, अमरूद, स्ट्रोबेरी आदि भी बौने किस्म की प्रजाति को आसानी से उगाये जा सकते हैं।

## गृहवाटिका बनाते समय निम्न बातों को ध्यान में रखें:-

- ▶ गृहवाटिका के लिए खुली घूप एवं हवादार छाया रहित स्थान उपयुक्त एवं सिंचाई का उचित स्रोत उपलब्ध हो।
- ▶ अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है छत पर गमलो के लिए कोकोपीट 3 हिस्सा, मिट्टी 1 हिस्सा व केंचुआ का खाद 1 हिस्सा का मिश्रण उपयुक्त है, क्योंकि इससे छत पर वजन नहीं पड़ेगा व गमलो को इधर उधर करने में आसानी रहेगी।
- ▶ वाटिका अगर खुली जगह में बना रहे है तो उसके चारों ओर सुरक्षा के लिए बाड़ बनानी चाहिए
- ▶ गृहवाटिका की क्यारियों में सड़ी हुई गोबर की खाद, जैविक खाद व नीम एवं अरण्डी की खली आदि का प्रयोग कर सकते हैं
- ▶ क्यारियों में समय-समय पर सिंचाई करते रहे तथा निडाई - गुडाई करके खरपतवार निकालते रहे।
- ▶ गृहवाटिका में कीट व बिमारियों से बचाव हेतु रासायनिक कीटनाशियों का प्रयोग करने के बजाय जैविक कीटनाशियों का प्रयोग करें।
- ▶ सीधे बुआई की जाने वाली या नर्सरी द्वारा लगाई जाने वाली सब्जियों को लगाने से पूर्व जैव फफूंदनाशी का व जैव कल्चर से उपचारित करके उचित दूरी बनाकर कतारों बुवाई में करें।
- ▶ क्यारियों में उपलब्ध जगह का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए बेलवाली सब्जियों जैसे लौकी, तोरी, करेला, खीरा आदि को दीवार के साथ उगाकर छत या बाड़ के ऊपर ले जा सकते हैं।
- ▶ जड़ वाली सब्जियों जैसे मूली, शलगम, गाजर व चुकन्दर को क्यारियों में मेड़ों के ऊपर बुआई करें।
- ▶ छत के ऊपर विभिन्न आकार के गमलो, ग्रीन बैग में मिश्रण भरकर बीज की बुआई व पौध की रोपाई कर गर्मियों में छायाकार जाली के आकार, सर्दियों में पारदर्शी पॉलीथीन सीट की सहायता से मौसम व बेमौसमी सब्जियों को भी आसानी से उगा सकते हैं
- ▶ बीज, पौध व जैविक खाद किसी विश्वस्तरीय संस्था से ही खरीदे तथा अच्छी उपज देने वाली व लम्बे समय चलने वाली फसल का चयन करें।
- ▶ छत पर गमलों में एवं क्यारियों में पौधों की लकड़ी व रस्सी द्वारा सहारा जरूर दें।



## गृहवाटिका में मौसम के अनुसार लगने वाले फल व सब्जियाँ:-

### ▶ ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ (बुआई का समय- फरवरी) :-

टमाटर, मिर्च, बैंगन, भिण्डी, बेलवाली सब्जियाँ जैसे लौकी(घीया), नेनुआ (तोरी), करेला, खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज, टिण्डा, पेठा, ग्वार, चौलाई (लाल व हरा), पालक, धनिया, मूली, लोबिया, राजमा, ग्वार, अरबी आदि

### ▶ वर्षाकालीन सब्जियाँ (बुआई का समय- जून-जुलाई) :-

टमाटर, मिर्च, बैंगन, बेलवाली सब्जियाँ जैसे लौकी(घीया), नेनुआ (तोरी), करेला, खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज, टिण्डा, पेठा आदि। ग्वार, चौलाई (लाल व हरा), पालक, धनिया, मूली, गाजर, लोबिया, राजमा, अंगेजी फूलगोभी, खरीफ प्याज

### ▶ शीतकालीन सब्जियाँ (बुआई का समय- सितम्बर-नवम्बर) :-

फूलगोभी, पत्ता गोभी, विदेशी सब्जियाँ गाजर, मूली, शलगम चुकन्दर, पालक, मैथी, बथुआ, धनिया सौफ, आलू, लहसून, प्याज, सेम आदि।

उपरोक्त सब्जियों के अलावा गृहवाटिका में कुछ छोटे बहुवर्षीय पौधे या फलवृक्ष भी लगाने चाहिए जैसे अमरूद, नीबू, अनार, केला, करोंदा, पपीता, अंगूर, सहजन, करीपता, सतावर आदि।

### प्रबन्धन:-

गृहवाटिका में छोटी-छोटी क्यारियां बनाकर और उसमें सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट तथा नीम की खली व अरण्डी की खली मिलाकर क्यारी समतल करके उसमें बीज की बुआई या पौधा की रोपाई कर हल्की सिंचाई कर दे। तथा समय-समय पर आवश्यकतानुसार सिंचाई, निराई व गुडाई करते रहना चाहिए। इसी प्रकार गमलो में सब्जियाँ की बुवाई के लिए मिश्रित मिट्टी इसकी प्रकार गमलों में मिश्रण (3 हिस्सा कोकोपिट, 1 हिस्सा मिट्टी, 1 हिस्सा कम्पोस्ट) को भरकर बीज की बुआई व रोपाई (3 हिस्सा कोकोपिट, 1 हिस्सा कोकोपिट व 1 हिस्सा वर्मी कम्पोस्ट) भरकर बुवाई या रोपाई कर देनी चाहिए। यदि दोनों विधियों में कीट व विमारियों का प्रकोप होने पर फफूदनाशी ट्राइकोडर्मा विरडी-2 ग्राम प्रति लि. पानी के घोल का स्प्रे करे। जैव कीटनाशी के रूप में नीम का तेल 3 हिस्सा और लहसुन का अर्क 1 हिस्सा मिलाकर 10 मी ली प्रति ली. पानी में घोल के स्प्रे करे। सब्जियों तैयार होने के बाद उनकी उचित अवस्था में तुडाई करके उपयोग में लेवे।।

उचित प्रबन्धन व देखभाल के साथ गृहवाटिका के अन्धराजी पौष्टिक, स्वादिष्ट तथा सुरक्षित सब्जिया पैदा की जा सकती है इस प्रकार गृहवाटिका हमारी खाद्य सुरक्षा का प्रमुख अंग बन सकता है।

## प्राकृतिक रूप से कीटों एवं बीमारियों से बचाव

कीट तथा बीमारियाँ प्राकृतिक होती हैं तथा इनसे सम्पूर्ण बचाव असंभव है इसके लिए कीट तथा रोग प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग लाभदायक होता है। प्रकृति में हानिकारक कीटों तथा इनके भक्षक एवं हमारे मित्र कीटों का एक अच्छा संतुलन है (जैसे टिड्डा, बग, दीमक, चेपा आदि) हानिकारक कीटों के उदाहरण हैं जबकि (प्रेपिग मेन्टिस, लेडीबर्ड, मकड़ी, बीटल, बर्ब आदि) कीटनाशी कीट हैं। यदि इस संतुलन से छेड़छाड़ हुई तो कोई एक समूह समस्या का कारण बन जाता है प्राकृतिक रूप से नियन्त्रण द्वारा इसी संतुलन को बनाने का प्रयास किया जाता है जिसमें इन कीटों तथा बीमारियों में कम से कम क्षति हो। रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग इस समस्या का समाधान नहीं है क्योंकि पिछले 50 वर्षों में इनके प्रयोग से दस गुनी बढ़ोतरी होने के उपरान्त भी कीटों तथा रोगों द्वारा होने वाला नुकसान बढ़ा है। जैविक खेती में कई विधियों द्वारा कीटों का नियंत्रण किया जाता है। स्वस्थ फसल उगाकर कीटों एवं रोगों को कम किया जा सकता है कीटों एवं रोगों से प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव जरूरी है प्रायः कीटों एवं रोगों के प्रति स्थानीय किस्मों में अधिक प्रतिरोधिता पाई जाती है। समय पर बुआई कर कीटों एवं रोगों में होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है

कीटों को भगाने वाली फसलों को सहयोगी के रूप में साथ-साथ उगाकर हाल या झाल द्वारा कीटों को पकड़ना कीटों एवं रोगों की सही पहचान करके हम उनके लिए प्रभावी तरीके अपनाकर अनेक कीटों और विमारियों को नियंत्रण कर सकते हैं।

फसल चक्र अपनाकर प्रभावी रूप से कीटों को नियंत्रण में ला सकते हैं। लाभदायक कीटभक्षी कीटों को प्राकृतिक आवास उपलब्ध करवाकर जिससे उनकी प्रर्याप्त संख्या बनी रहे तथा वे हानिकारक कीटों का नियंत्रण करके सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध तरीके से उपरोक्त उपायों का प्रयोग करते हुए कीटनाशकों के बिना ही उनका नियन्त्रण किया जा सके।

### मृदा प्रबंधन की उपयोगिता

अच्छी फसल उगाने तथा अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए मृदा का उचित प्रबंधन करना बहुत ही आवश्यक है। इसमें मृदा में सूक्ष्म जीवों की संख्या, मृदा की बनावट तथा इसमें उपस्थित सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा का विशेष ध्यान रखना होता है। रासायनिक उर्वरक, फसल को थोड़े समय के लिए ही पोषण प्रदान करते हैं। ये पौधों की तीव्र वृद्धि में सहायक होते हैं। किन्तु इसमें पौधे विभिन्न जैविक एवं अजैविक कारकों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं कृत्रिम उर्वरक, मृदा में कार्बनिक तत्व नहीं बढ़ाते हैं और न ही मृदा में उपस्थित सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाते हैं। इन सभी कारकों से मृदा धीरे-धीरे कठोर तथा सुखी हो जाती है और इसके परिणाम स्वरूप मृदा की क्षमता कम हो जाती है। साथ ही मृदा अपरदन की दर भी बढ़ जाती है मृदा में उपस्थित सूक्ष्मजीवों के कारण मृदा को जीवित माना जाता है। ये सूक्ष्म जीव विभिन्न तत्वों के चक्रीकरण में प्रमुख भूमि को निभाते हैं। तथा विभिन्न पोषक तत्वों को पौधे हेतु प्राप्त अवस्था में परिवर्तित करते हैं। अतः कम्पोस्ट, गोबर तथा केंचुए की खाद आदि का प्रयोग करने से मृदा की गुणवत्ता बढ़ने के साथ-साथ इन सूक्ष्म जीवों को भोजन प्राप्त होता है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र भी सुचारू रूप से चलता है एवं हरी खाद से भी इन सूक्ष्म जीवों को भोजन मिलता है। हरी खाद बनाने के लिए अधिक नाइट्रोजन संग्रहित करने वाले पौधों जैसे टैचा, सनई, आदि को खेत में उगाते हैं तथा विकसित पौधों को जमीन में दबा देते हैं। यह बात विशेष रूप से जैविक खाद का अधिक प्रयोग या असमय प्रयोग रासायनिक खाद जितनी ही हानि पहुँचा सकता है। अतः किसानों की खेत में उचित समय पर ही सस्य क्रियायें करनी चाहिए जिससे पौधों को समुचित पोषण मिल सकें।

### आँवला एक अमृत फल

आँवला बहुत ही गुणकारी फल है। यह विटामिन 'सी' का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें विटामिन 'सी' की मात्रा अमरूद, टमाटर तथा नींबू की अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है।

आँवले का नियमित सेवन व्यक्ति को अनेक रोगों से मुक्त रखता है। इसके सेवन से बढ़ने वाले बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास तेजी से होता है यह संक्रामक रोगों से बचाए रखता है। इसके अभाव में रक्त वाहिनियों की दीवारें शिथिल हो जाती हैं अस्थियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। दाँत पीले पड़ जाते हैं। फेफड़ों की दीवार अन्दर धंस जाती है। ऐसी अवस्था में शरीर की संक्रामक रोगों से बचाव या लड़ने की क्षमता कम होना स्वाभाविक ही है

आँवला में पोषक तत्व (प्रति 100 ग्राम आँवला)

- 1 ऊर्जा - 352 किलो कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट - 87 ग्राम
- 2 प्रोटीन - 0.49 ग्राम, विटामिन 'सी' - 540 मिली ग्राम
- 3 कैल्शियम - 0.21 मिली ग्राम, वसा - 0.09 मिली ग्राम

औषधीय गुण :

- यह कफ को निकालता है
- इसके नियमित सेवन से शरीर में शक्ति एवं फुर्ती बनी रहती है और त्वचा भी स्वस्थ रहती है।
- इसकी तासीर अति शीतल है इस कारण दिमाग को शान्त करता है साथ ही दिमाग को शक्ति प्रदान करता है। इसका नियमित सेवन सिरदर्द का दूर करने व स्मरण शक्ति को बढ़ाने में सहायक है।
- आँवले के सेवन से नए खून का निर्माण होता है एवम् गर्भावस्था में आँवला रक्त की कमी दूर करता है।
- इसमें रक्त सम्बन्धी सारे विकारों को दूर करने की शक्ति है यह रक्त को शुद्ध रखता है और शरीर के विजातीय तत्वों को



दूर करता है

- दाँतो से सम्बन्धित रोग जैसे पायरिया में ताजा आंवला खाना बहुत लाभप्रद होता है
- बचपन से ही बच्चों को यदि आँवला खिलाया जाए तो इसके दाँत चमकीले निरोग और मजबूत रखते हैं।
- पेट व गले की जलन, खाना न पचना, खट्टी डकारें, गैस व कब्जमें आँवले का रस या चूर्ण-दुध पानी या शहद के साथ लेने से इन सभी परेशानियों से छुटकारा मिलता है।
- बालों को काला, घना, लम्बा व चमकदार बनाने की यह सबसे सस्ती व सहज - सुलभ औषधि है इसके लिए 20 ग्राम आँवले का चूर्ण, 50 ग्राम दही में मिलाकर लगायें।
- मोतियाबिन्द होने पर रोजाना एक बड़ा चम्मच आँवले का रस शहद के साथ मिलाकर खाने से लाभ मिलता है।
- आँवले के बारीक चूर्ण को ठंडे पानी में भिगोकर रात भर रख दे। सुबह छान कर इस पानी से आँखे घोने से दृष्टि की कमजोरी दूर होती है।
- आँवले में मौजूद विटामिन 'सी' रक्तवाहिनियों का फैलाव उच्च रक्तचाप को कम करने में मदद करता है।
- एक चम्मच सूखा आँवला एवं चीनी के पाउडर को एक गिलास पानी में मिलाकर खाली पेट लेने से रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियमित किया जाता है।

## प्रयोगशाला सेवार्यें

### ▶ पादप स्वास्थ्य जाँच प्रयोगशाला:-

कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा के पादप स्वास्थ्य जाँच प्रयोगशाला में किसानों द्वारा लाये गये रोग ग्रस्त नमूनों की जाँच निःशुल्क की जाती है। जिससे किसानों की पौधों की सही बीमारी पहचान एवं उसके निदान के बारे में जानकारी दी जा सके। इस दौरान जुलाई-दिसम्बर 2017 तक लगभग 35 पादप रोग के नमूनों की जाँच की गई जिसमें मुख्य रूप से में आर्द्रगलन, सब्जियों में ब्लॉक रॉट (सड़न रोग), म्लानि (फ्यूजेरियम), सरसों में सफेद रतुआ, रस्ट की बीमारी, धान में बकानी, भूरा धब्बा, ब्लाइट आदि की नमूनों की जाँच की गई तथा उसके उचित प्रबंधन के बारे में किसानों को बताया गया।

### ▶ मृदा एवं जल परीक्षण प्रयोगशाला:-

कृषि विज्ञान केंद्र, उजवा, नई दिल्ली द्वारा खरीफ फसल की कटाई के उपरान्त खाली खेत से मृदा परीक्षण अभियान चलाकर दिल्ली के विभिन्न गाँवों से मृदा एवं जल के नमूने लिये गये, उनकी जाँच के आधार पर किसानों को फसल का चयन, खाद एवं उर्वरक के प्रबंधन को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के माध्यम से किसानों को बताया गया। उसके साथ - साथ किसानों को यह भी बताया गया कि सिफारिश खाद एवं उर्वरक का प्रयोग असंतुलित मात्रा में न करे, जिससे कि कृषि की लागत को कम किया जा सकता है। किसानों के लिए मृदा एवं जल का परीक्षण कृषि विज्ञान केंद्र पर निःशुल्क किया जाता है।

## कृषि विज्ञान केंद्र, में गुणवतायुक्त बीज एवं खाद उपलब्ध

क्र.सं.	फसल	प्रजाति
1.	गेहूँ	एच. डी. 2967
2.	सरसो	पूसा विजय
3.	पालक	पूसा आलग्रीन
4.	सरसो साग	पूसा सरसा साग न. -1
5.	किचन गार्डन कीट	सब्जी बीज
6.	जैविक खाद	केचुआ खाद
7.	मशरूम	स्पॉन/कम्पोस्ट
8.	एन. एच. आर. डी. एफ. ट्रोइकोवीर	ट्राइकोडर्मा विरीडी
9.	बायोब्रेम	बेवरिया वोतीयान्य

## कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के टेलीविजन व रेडियों कार्यक्रम

क्र.सं.	विषय	चैनल	प्रसारण तिथि	विषय विशेषज्ञ
1.	खाद्य प्रसंस्करण (सीधा प्रसारण)	डी.डी किसान	03.07.2017	गृह विज्ञान
2.	आम का प्रसंस्करण (प्रसारण)	कृषि दर्शन	28.07.2017	गृह विज्ञान
3.	भण्डारित अनाज का प्रबंधन (सीधा प्रसारण)	कृषि दर्शन	21.08.2017	गृह विज्ञान
4.	स्कील इण्डिया - सशक्त युवा किसान (प्रसारण)	डी.डी. किसान	04.09.2017	गृह विज्ञान
5.	सेब का परिरक्षण एवं प्रसंस्करण (प्रसारण)	कृषि दर्शन	25.09.2017	गृह विज्ञान
6.	फसल अवशेष को न जलाये (प्रसारण)	डी.डी. किसान	05.10.2017	पादप सुरक्षा
7.	मौसमी फल एवं सब्जियों का परिरक्षण (सीधा प्रसारण)	कृषि दर्शन	22.11.2017	गृह विज्ञान
8.	मधुमक्खी पालन (सीधा प्रसारण)	डी.डी. किसान	30.11.2017	पादप सुरक्षा
9.	प्याज की खेती (सीधा प्रसारण)	डी.डी. किसान	06.12.2017	कार्यक्रम समन्वयक
10.	फूल उत्पादन (सीधा प्रसारण)	विद्या मुक्त रेडियो (एन आई ओ एस)	18.07.2017	बागवानी
11.	लघु एवं कुटीर उद्योग में महिलाओं के लिए प्रबंधन	ए आई आर	12.07.2017	गृह विज्ञान
12.	सब्जियों में एकीकृत नाशीकीट प्रबंधन	एन आई ओ एस	12.10.2017	पादप सुरक्षा

## कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा समाचार पत्रों में





## कृषि विज्ञान केन्द्र, उजवा के प्रमुख प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कृषि प्रसार गतिविधियाँ

क्र.सं.	प्रशिक्षण विषय	स्थान	माह	अवधि
1.	सब्जियों में फेरोमोन ट्रैप का उपयोग (गंधपाथ प्रपंच)		जुलाई	एकदिवसीय
2.	अगेती पतेदार सब्जियों की उत्पादन तकनीकी		जुलाई	एकदिवसीय
3.	मिट्टी एवं पानी का नमूने लेने की विधि		जुलाई	एकदिवसीय
4.	खरीफ मौसम की सब्जियों का उत्पादन तकनीकी		अगस्त	एकदिवसीय
5.	मिट्टी में संतुलित खाद एवं उर्वरक का प्रयोग एवं प्रबंधन		अगस्त	एकदिवसीय
6.	आय अर्जित करने हेतु कृषक नवीनतम विधिया		सितम्बर	एकदिवसीय
7.	रबी मौसम के सब्जियों की उत्पादन तकनीकी		सितम्बर	एकदिवसीय
8.	रबी मौसम के सब्जियों में एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन		अक्टूबर	एकदिवसीय
9.	सब्जियों में खाद एवं उर्वरक की उपयोगिता		अक्टूबर	एकदिवसीय
10.	स्वयं सहायता समूह के गठन का महत्व		अक्टूबर	एकदिवसीय
11.	किसानों के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड का महत्व		नवम्बर	एकदिवसीय
12.	विदेशी सब्जियों की उत्पादन तकनीकी		नवम्बर	एकदिवसीय
13.	सरसों में एफीड (चेपा) कीट का प्रबन्धन		नवम्बर	एकदिवसीय
14.	रबी प्याज की उत्पादन तकनीकी		दिसम्बर	एकदिवसीय
15.	बाजरा का प्रसंस्करण		दिसम्बर	एकदिवसीय
16.	गृहवाटिका हेतु मृदा एवं जल के परीक्षण का महत्व		दिसम्बर	एकदिवसीय
17.	गेहूँ की फसल में दीमक का प्रबन्धन		दिसम्बर	एकदिवसीय

### व्यावसायिक प्रशिक्षण

1.	आम के फल का मूल्य संवर्धन	के. वी. के. परिसर	14-15 जुलाई 17	दोदिवसीय
2.	बागवानी फसलों की नर्सरी उत्पादन तकनीक	के. वी. के. परिसर	20-26 जुलाई 17	सातदिवसीय
3.	फल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन	के. वी. के. परिसर	10-20 नवम्बर 17	दसदिवसीय

### प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण

1.	किशोर स्वस्थ और पौष्टिक आहार	के. वी. के. परिसर	30 अक्टूबर 17	एकदिवसीय
----	------------------------------	-------------------	---------------	----------

## अन्य प्रसार गतिविधियाँ

1. प्रक्षेत्र दिवस/किसान गोष्ठी
2. विधि प्रदर्शन
3. मृदा परीक्षण अभियान
4. बीज उपचार अभियान
5. के.वी.के. पर किसान भ्रमण
6. किसानों के खेत पर विशेषज्ञों का भ्रमण
7. महत्वपूर्ण दिवस का आयोजन
8. फिल्म प्रदर्शन, प्रदर्शनी, प्रकाशन/लेखन
9. रेडियो, टी.वी. एवं समाचार पत्र
10. प्रदर्शनी, किसान मेला, सेमीनार एवं कृषक भ्रमण

---

### बुक पोस्ट (त्रिमासिक मुद्रित सामग्री)

---

यदि प्राप्त नहीं होने पर वापसी पता :

**डॉ० पी. के. गुप्ता**

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र उजवा,

नई दिल्ली-110073

दुरभाष : 011-65638199

ई-मेल : kvkujwa@yahoo.com

सेवा में,

---

---

---

---

---